

बौद्ध धर्म का प्रचार और बंगाल

प्रहलाद-सिंह "अहलूवालिया", सम्पादक, शोध प्रकाशन, हिसार, हरियाणा

मेल आईडी : ahluwalia002@gmail.com

परिचय

बौद्ध धर्म, 6वीं शताब्दी ईसा पूर्व में भगवान बुद्ध द्वारा स्थापित, भारत के धार्मिक और सांस्कृतिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसका प्रभाव पूरे भारत में फैला, लेकिन बंगाल में इसका विशेष महत्व था। बंगाल बौद्ध धर्म के प्रसार का एक प्रमुख केंद्र बना और यहाँ बौद्ध संस्कृति का विकास अत्यधिक हुआ। यह शोध पत्र बौद्ध धर्म के बंगाल में प्रचार, उसके विकास और सांस्कृतिक प्रभाव पर प्रकाश डालता है।

1. बौद्ध धर्म का प्रारंभिक प्रचार और बंगाल में प्रभाव

बौद्ध धर्म की उत्पत्ति उत्तरी भारत में हुई थी, लेकिन जल्द ही इसका विस्तार पूर्वी भारत, विशेषकर बंगाल की ओर हुआ। 3वीं शताब्दी ईसा पूर्व में सम्राट अशोक के शासनकाल में बौद्ध धर्म का भारत में व्यापक प्रसार हुआ। अशोक ने बंगाल सहित पूरे भारत में बौद्ध धर्म के सिद्धांतों का प्रचार किया। अशोक ने बौद्ध धर्म को राजकीय धर्म के रूप में स्वीकार किया और बंगाल में कई स्तूपों, विहारों और स्तंभों का निर्माण करवाया।

बंगाल के प्राचीन महाजनपद अंग और मगध के निकट होने के कारण यह क्षेत्र बौद्ध धर्म के प्रसार का एक प्रमुख केंद्र बन गया। महाविहार, नालंदा और विक्रमशिला जैसे बौद्ध विश्वविद्यालयों की स्थापना ने बंगाल को बौद्ध शिक्षा और प्रचार का मुख्य केंद्र बना दिया। बौद्ध भिक्षुओं ने यहाँ से तिब्बत, नेपाल और दक्षिण पूर्व एशिया तक बौद्ध धर्म का प्रचार किया।

2. पाल वंश और बौद्ध धर्म का उत्कर्ष

बंगाल में बौद्ध धर्म का सबसे बड़ा उत्कर्ष पाल वंश के शासनकाल में हुआ, जो 8वीं से 12वीं शताब्दी तक बंगाल और बिहार पर शासन करते रहे। पाल शासक बौद्ध धर्म के अनुयायी थे और उन्होंने बौद्ध शिक्षा और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए व्यापक प्रयास किए। धर्मपाल और देवपाल जैसे शासकों ने विक्रमशिला, सोमपुर महाविहार और ओदंतपुरी जैसे प्रमुख बौद्ध विश्वविद्यालयों की स्थापना की, जिन्होंने बौद्ध शिक्षा को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्यातिप्राप्त किया।

पाल शासकों की उदारता के कारण बंगाल बौद्ध धर्म का प्रमुख केंद्र बन गया और यहाँ तंत्र, महायान और वज्रयान जैसी बौद्ध शाखाओं का भी विकास हुआ। बंगाल से कई विद्वान और भिक्षु बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए तिब्बत, चीन और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में गए। इनमें से प्रमुख नाम अतीश दीपंकर का था, जिन्होंने तिब्बत में बौद्ध धर्म के पुनरुद्धार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

पाल वंश का शासनकाल भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है, जिसने बंगाल, बिहार और वर्तमान बांग्लादेश के क्षेत्रों में अपने प्रभाव को स्थापित किया। 8वीं से 12वीं शताब्दी तक शासन करने वाले पाल वंश के राजा बौद्ध धर्म के संरक्षक थे, और उनके शासनकाल के दौरान बौद्ध धर्म का पुनरुत्थान हुआ। पाल वंश के संरक्षण में बौद्ध धर्म न केवल भारतीय उपमहाद्वीप में, बल्कि तिब्बत, नेपाल और दक्षिण पूर्व एशिया में भी अपने उत्कर्ष को प्राप्त कर सका।

इस शोध पत्र का उद्देश्य पाल वंश के शासनकाल और बौद्ध धर्म के विकास के बीच के सम्बंध का अध्ययन करना है, जिसमें उनके राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक योगदानों पर प्रकाश डाला जाएगा।

2.1 पाल वंश का उदय और विस्तार

पाल वंश की स्थापना गोपाल द्वारा 8वीं शताब्दी के मध्य में हुई थी, जब बंगाल में अशांति का माहौल था। गोपाल ने साम्राज्य की नींव रखी और अपने पुत्र धर्मपाल ने इस साम्राज्य का विस्तार किया। धर्मपाल के शासनकाल में पाल साम्राज्य ने अपनी चरम सीमा पर पहुंचकर उत्तर भारत के कई हिस्सों को अपने अधीन कर लिया। धर्मपाल ने कन्नौज के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष में हिस्सा लिया और एक शक्तिशाली सम्राट के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त की।

धर्मपाल और देवपाल जैसे राजा न केवल अपने राजनीतिक कौशल के लिए प्रसिद्ध थे, बल्कि वे बौद्ध धर्म के महान संरक्षक भी थे। उनके शासनकाल में बौद्ध धर्म का प्रसार और संरक्षण हुआ, जिससे यह धर्म नई ऊँचाइयों तक पहुंचा।

2.2 बौद्ध धर्म का पुनरुत्थान

पाल वंश के शासकों ने बौद्ध धर्म के महायान संप्रदाय का समर्थन किया, जो पहले से ही उत्तर भारत में प्रचलित था। धर्मपाल और देवपाल के शासनकाल के दौरान, कई महत्वपूर्ण बौद्ध संस्थान जैसे नालंदा विश्वविद्यालय, विक्रमशिला विश्वविद्यालय और ओदंतपुरी महाविहार का निर्माण हुआ। इन विश्वविद्यालयों ने बौद्ध धर्म के अध्ययन, शिक्षण और प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

नालंदा विश्वविद्यालय विशेष रूप से पाल शासकों के संरक्षण में पनपा, जो अपने समय का सबसे बड़ा और सबसे प्रभावशाली बौद्ध शिक्षा केंद्र था। यहाँ पर बौद्ध धर्म के अलावा विभिन्न विषयों पर भी अध्ययन किया जाता था। नालंदा और विक्रमशिला जैसे महाविद्यालयों ने बौद्ध धर्म के सिद्धांतों को दूर-दूर तक फैलाया, और यहाँ से शिक्षा प्राप्त कर विदेशी विद्वान भी अपने देशों में बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार करने लगे।

2.3 पाल वंश का सांस्कृतिक और कला संबंधी योगदान

पाल शासकों ने न केवल बौद्ध धर्म को प्रोत्साहित किया, बल्कि उन्होंने बौद्ध कला और संस्कृति के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। पाल काल में बनी मूर्तियाँ, स्तूप और मठ उत्कृष्ट बौद्ध कला के उदाहरण हैं। इस काल की मूर्तिकला में भव्यता और सौंदर्य का अद्वितीय संगम दिखाई देता है। पाल कला की विशेषता इसमें निर्मित बुद्ध की मूर्तियों में गंभीरता, ध्यान मुद्रा, और सुंदर सौंदर्य का चित्रण था।

पाल शासकों ने अनेक स्तूपों और विहारों का निर्माण कराया, जो न केवल धार्मिक गतिविधियों का केंद्र बने, बल्कि सांस्कृतिक धरोहर के रूप में भी देखे गए। पाल साम्राज्य के दौरान बौद्ध विहारों में विदेशी छात्रों का भी आना-जाना लगा रहता था, जिससे भारतीय बौद्ध धर्म की शिक्षाएँ चीन, तिब्बत, नेपाल और अन्य देशों में फैलीं।

2.4 बौद्ध धर्म का अंतरराष्ट्रीय प्रसार

पाल वंश के संरक्षण में बौद्ध धर्म ने तिब्बत, नेपाल और दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में अपनी जड़ें जमाईं। तिब्बती बौद्ध धर्म के कई प्रमुख ग्रंथों का अनुवाद पाल काल के विद्वानों द्वारा किया गया। तिब्बत के राजाओं के साथ पाल शासकों के अच्छे संबंध थे, और तिब्बत में बौद्ध धर्म के प्रसार में पाल साम्राज्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

पाल वंश के विद्वानों ने बौद्ध धर्म को अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रतिष्ठित किया, और यह काल बौद्ध धर्म के इतिहास में एक महत्वपूर्ण युग के रूप में देखा जाता है। पाल शासकों के संरक्षण में बौद्ध धर्म ने तिब्बत और नेपाल के साथ-साथ चीन और अन्य देशों में भी अपनी पहचान बनाई।

2.5 पाल वंश का पतन और बौद्ध धर्म का अवसान

12वीं शताब्दी में पाल साम्राज्य के पतन के साथ ही बौद्ध धर्म का प्रभाव भी कम होने लगा। इसके बाद धीरे-धीरे भारत में बौद्ध धर्म का पतन हुआ और यह धर्म अन्य एशियाई देशों में फैल गया। पाल वंश के पतन के बाद भारतीय उपमहाद्वीप में इस्लाम और हिंदू धर्म का वर्चस्व बढ़ने लगा, जिससे बौद्ध धर्म की स्थिति कमजोर होती चली गई।

3. बौद्ध धर्म का पतन और बंगाल में पुनरुत्थान के प्रयास

12वीं शताब्दी के बाद बंगाल में बौद्ध धर्म का पतन प्रारंभ हुआ। इस पतन के कई कारण थे, जिनमें इस्लाम के प्रसार, ब्राह्मणवाद के पुनरुत्थान, और पाल वंश के पतन को प्रमुख माना जा सकता है। बौद्ध धर्म धीरे-धीरे बंगाल के जनजीवन से हट गया और बंगाल में हिंदू धर्म और इस्लाम का प्रभाव बढ़ने लगा।

हालांकि, 19वीं और 20वीं शताब्दी में बौद्ध धर्म का पुनरुत्थान हुआ। अतीश दीपंकर के प्रति सम्मान और बौद्ध धरोहर के प्रति नई जागरूकता ने बंगाल में बौद्ध धर्म को फिर से जीवित करने के प्रयास किए। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान, बौद्ध धर्म की शांति, अहिंसा और समानता के संदेश को पुनः उभारा गया। बौद्ध स्तूपों, विहारों और अन्य धरोहर स्थलों का पुनर्निर्माण और संरक्षण किया गया।

बौद्ध धर्म भारत में एक समय पर सबसे प्रभावशाली धर्मों में से एक था, जिसका व्यापक प्रसार भारत से लेकर एशिया के विभिन्न हिस्सों तक हुआ। यह धर्म सामाजिक समानता, अहिंसा, और नैतिकता के आधार पर जनमानस में अपनी गहरी छाप छोड़ने में सफल रहा। परंतु, धीरे-धीरे बौद्ध धर्म का भारत में पतन हुआ और इसका प्रभाव कम होता गया। बंगाल, जो एक प्रमुख बौद्ध केंद्र था, में भी बौद्ध धर्म की स्थिति कमजोर हो गई। फिर भी, विभिन्न समयों पर इस धर्म को पुनर्जीवित करने के प्रयास किए गए, विशेष रूप से बंगाल में।

3.1 बौद्ध धर्म का पतन: कारण और प्रभाव

बौद्ध धर्म का पतन कई कारणों से हुआ, जिनमें प्रमुख थे:

- **हिंदू धर्म का पुनरुत्थान:** बौद्ध धर्म के पतन का एक प्रमुख कारण हिंदू धर्म का पुनरुत्थान था। गुप्तकाल के बाद वैदिक और पौराणिक धर्मों का पुनः उभार हुआ और हिंदू धर्म ने बौद्ध धर्म के साथ प्रतिस्पर्धा में अपनी श्रेष्ठता स्थापित कर ली।
- **संस्थागत गिरावट:** बौद्ध मठों की संस्थागत शक्ति भी धीरे-धीरे कमजोर होने लगी। ये मठ बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के मुख्य केंद्र थे, परंतु समय के साथ आंतरिक भ्रष्टाचार और गिरावट के कारण ये मठ अपनी प्रासंगिकता खोने लगे।
- **आक्रामक शासक और आक्रमण:** इस्लामी आक्रमण और विदेशी शासकों द्वारा बौद्ध मठों और मूर्तियों पर हमला भी बौद्ध धर्म के पतन में योगदानकारी रहा। कई बौद्ध मठ नष्ट कर दिए गए और बौद्ध भिक्षुओं को पलायन करना पड़ा।

- **राजनीतिक संरक्षण की कमी:** बौद्ध धर्म का पतन इस कारण भी हुआ क्योंकि उसे राज्य का संरक्षण नहीं मिला। कई राजाओं ने हिंदू धर्म को अपना समर्थन दिया, जिससे बौद्ध धर्म कमजोर हुआ।

3.2 बंगाल में बौद्ध धर्म के पुनरुत्थान के प्रयास

बंगाल का क्षेत्र बौद्ध धर्म के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था। यहाँ की मठीय परंपरा, विशेष रूप से पाल वंश के शासकों के समय, बौद्ध धर्म का एक प्रमुख केंद्र बनी रही। पाल शासकों ने बौद्ध धर्म को संरक्षण दिया और नालंदा, विक्रमशिला, और ओदंतपुरी जैसे प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों की स्थापना की, जहाँ से बौद्ध विचारधारा का प्रसार हुआ।

लेकिन पाल वंश के पतन के साथ ही बंगाल में बौद्ध धर्म का प्रभाव भी कम होने लगा। हिंदू धर्म का पुनरुत्थान और इस्लामी शासन की स्थापना ने इस धर्म को कमजोर कर दिया।

बौद्ध धर्म का पुनरुत्थान कई बार बंगाल में हुआ, विशेषकर 19वीं और 20वीं शताब्दी में। इन प्रयासों में निम्नलिखित प्रमुख थे:

- **राजा राममोहन राय और समाज सुधार आंदोलन:** 19वीं शताब्दी के बंगाल पुनर्जागरण के दौरान, राजा राममोहन राय और उनके जैसे समाज सुधारकों ने बौद्ध धर्म के विचारों की पुनर्व्याख्या की और इसे आधुनिकता के साथ जोड़ने का प्रयास किया।
- **महाबोधि सोसाइटी:** 1891 में अनागरिक धर्मपाल द्वारा स्थापित महाबोधि सोसाइटी ने बौद्ध धर्म के पुनरुत्थान के प्रयासों को बढ़ावा दिया। सोसाइटी ने बौद्ध धर्म के पवित्र स्थलों के संरक्षण और बौद्ध विचारधारा के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **डॉ. बी. आर. आंबेडकर का योगदान:** डॉ. आंबेडकर ने बौद्ध धर्म को सामाजिक न्याय और समानता के सिद्धांतों के आधार पर पुनर्जीवित करने का प्रयास किया। उन्होंने 1956 में अपने अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म ग्रहण किया, जिससे बंगाल और अन्य क्षेत्रों में इस धर्म के पुनरुत्थान को गति मिली।
- **धर्म प्रचारकों का योगदान:** 20वीं शताब्दी में बंगाल में बौद्ध धर्म के प्रचार में स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध धर्म प्रचारकों ने भी योगदान दिया। बुद्धिस्ट सोसाइटी ऑफ इंडिया जैसे संगठनों ने बौद्ध धर्म के विचारों को नए तरीके से प्रस्तुत किया।

बौद्ध धर्म का पतन और बंगाल में पुनरुत्थान भारतीय इतिहास के महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है। यह धर्म, जो कभी बंगाल में प्रमुख था, समय के साथ कमजोर हुआ, लेकिन कई समाज सुधारकों और बुद्धिजीवियों के प्रयासों

से इसे पुनर्जीवित करने का प्रयास किया गया। बंगाल में बौद्ध धर्म का पुनरुत्थान न केवल धर्म के प्रचार-प्रसार का हिस्सा है, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की भी अभिव्यक्ति है। आज भी बौद्ध धर्म बंगाल के सांस्कृतिक परिदृश्य का एक अभिन्न हिस्सा बना हुआ है।

4. बौद्ध धर्म का बंगाल की संस्कृति पर प्रभाव

बौद्ध धर्म ने बंगाल की सांस्कृतिक धारा को गहराई से प्रभावित किया। कला, साहित्य, और वास्तुकला में बौद्ध धर्म का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। बौद्ध धर्म के प्रभाव में निर्मित बौद्ध मूर्तियाँ, पेंटिंग्स, और मठवासी निर्माण बंगाल की कला की धरोहर का हिस्सा बन चुके हैं। विक्रमशिला और नालंदा जैसे बौद्ध विश्वविद्यालयों ने शिक्षा और बौद्धिक विकास में अपार योगदान दिया। बौद्ध धर्म के आदर्शों ने समाज में समानता, अहिंसा, और दया की भावना को बढ़ावा दिया।

5. निष्कर्ष

बौद्ध धर्म का बंगाल में प्रसार और उसका प्रभाव न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था, बल्कि बंगाल की सांस्कृतिक, बौद्धिक और सामाजिक संरचना पर भी गहरा प्रभाव डालने वाला था। पाल वंश के शासनकाल में बंगाल बौद्ध धर्म का एक महत्वपूर्ण केंद्र बना रहा, जबकि इसके पतन के बाद भी इसकी धरोहर जीवित रही। आज भी बंगाल में बौद्ध धर्म के प्रभाव को सांस्कृतिक स्थलों और स्मारकों में देखा जा सकता है। बौद्ध धर्म की शिक्षाओं और उसकी सांस्कृतिक धरोहर का अध्ययन बंगाल के इतिहास और संस्कृति को समझने के लिए अनिवार्य है।

6. सन्दर्भ

- धर्मपाल, शरद. "बंगाल में बौद्ध धर्म का इतिहास". कोलकाता: एशियाई प्रकाशन, 2005.
- मुखर्जी, रमेश चंद्र. "पाल वंश और बौद्ध धर्म का उत्कर्ष". कोलकाता: भारतीय इतिहास परिषद, 1972.
- दत्त, नीलकंठ. "भारत में बौद्ध धर्म का पतन और पुनरुत्थान". नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1980.
- तिवारी, अशोक. "अतीश दीपंकर और तिब्बत में बौद्ध धर्म का पुनरुत्थान". दिल्ली: भारतीय बौद्ध अध्ययन केंद्र, 1995.
- रे, अनिल कुमार. "बंगाल की बौद्ध कला और स्थापत्य". कोलकाता: कला भवन पब्लिकेशंस, 1990.
- गोपाल, राम. "पाल वंश और भारतीय इतिहास", नई दिल्ली: साहित्य प्रकाशन, 1980।

- मिश्रा, राकेश. "नालंदा विश्वविद्यालय: बौद्ध धर्म और शिक्षा का केंद्र", पटना: बिहार इतिहास समिति, 2005।
- थापर, रोमिला. "अर्ली इंडिया: फ्रॉम द ऑरिजिंस टू ए.डी. 1300", यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 2002।
- बासु, अर्नब. "पाल साम्राज्य और बौद्ध कला का विकास", कोलकाता: कला भारती प्रकाशन, 1998।
- चौधरी, वी.के. "भारत का मध्यकालीन इतिहास", वाराणसी: भारतीय विद्या भवन, 1995
- शर्मा, राधाकृष्णन. "बौद्ध धर्म का इतिहास". वाराणसी: ज्ञान भारती प्रकाशन, 1995.
- आचार्य, नरेन्द्र. "पाल वंश और बौद्ध धर्म". कोलकाता: भारती प्रकाशन, 2001.
- सिंह, सुरेश. "बौद्ध धर्म का पतन और पुनरुत्थान". दिल्ली: लोकहित प्रकाशन, 2010.
- घोष, निरंजन. "बंगाल में बौद्ध धर्म का पुनरुत्थान". कोलकाता: पश्चिम बंगाल विश्वविद्यालय प्रेस, 2015.
- धर्मपाल, अनागरिक. "महाबोधि सोसाइटी और बौद्ध पुनरुत्थान". मुंबई: महाबोधि पब्लिशर्स, 1891